प्रबन्धन मे नियन्त्रण का अर्थ व परिभाषाएँ →

नियन्त्रण प्रबन्धन का एक महत्वपूर्ण कार्य है। इसके द्वारा ही प्रबन्धन ज्ञात करता है कि कार्य निष्पादन पूर्व-निश्चित योजना के अनुसार हो रहा है या नहीं हो रहा है और यदि नहीं हो रहा है तो इसका क्या कारण है? साथ ही साथ नियन्त्रण उत्पादन की मात्रा मे वृद्धि करता है और लागत मे तथा कर्मचारियों के विकास मे सहायता करता है। प्रबन्धन मे नियम के अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने के लिए विभिन्न विद्वानो द्वारा दी गयी परिभाषाओं का अध्ययन करना आवश्यक है। जो निम्नलिखित है

कुन्ट्ज एवं ओडोनेल →

के अनुसार "नियन्त्रण एक प्रबन्धकीय कार्य है जो कि अधीनस्थ कर्मचारियों के निष्पादन का मापन एवं उसमें सुधार

करता है। जिससे यह निश्चित हो सके कि उपक्रम के उद्देश्य एवं उनको प्राप्त करने के लिए निर्धारित योजनाओं को क्रियान्वित किया जा रहा है।"

प्रो० होमेन के अनुसार → नियन्त्रण जाँच द्वारा यह निर्धारित करने की प्रक्रिया है। कि योजनाओं का पालन किया जा रहा है कि नहीं उद्देश्य व लक्ष्यों की प्राप्ति की दिशा में उपयुक्त प्रगति हो रही है कि नहीं यदि आवश्यक हो तो अन्तर को सुधारने के लिए आवश्यक कदम उठाना है।

मरीकुशिंग नाइल्स → "नियन्त्रण किसी निश्चित लक्ष्य तथा लक्ष्यों के समूह की ओर निर्देशित क्रियाओं में सन्तुलन बनाए रखना है।

प्रबन्धन में नियन्त्रण की विशेषताएँ

निम्नलिखित हैं।

(1) प्रबन्धन में नियन्त्रण की प्रक्रिया वैज्ञानिक है।

(2) नियन्त्रण प्रबन्धन का प्रमुख कार्य है।

(3) प्रबन्धन में नियन्त्रण द्वारा वांछित लक्ष्यों की प्राप्ति की जाँच की जाती है।

(4) प्रबन्धन में नियन्त्रण एक गतिशील प्रक्रिया है जो निरन्तर चलती रहती है।

(5) प्रबन्धन में नियन्त्रण द्वारा कार्यों का स्वरूप योजना बद्ध तरीके से किया जाता है।

(6) प्रबन्धन में नियन्त्रण की प्रक्रिया वैज्ञानिक नियमों एवं सिद्धान्तों के साथ-साथ सांख्यकीय तत्वों पर आधारित है।

प्रबन्धन में नियन्त्रण के मूल तत्व →

किसी भी व्यवसायिक संगठन (शिक्षण-संस्थान) में पर्याप्त एवं प्रभावशाली प्रबन्धन में नियन्त्रण के प्रमुख मूल तत्व अग्रांकित हो सकते हैं

(1) प्रबन्ध में नियन्त्रण सरल एवं उपयुक्त

प्रबन्ध में नियन्त्रण की प्रक्रिया या प्रणाली शिक्षण संस्थान की आवश्यकता एवं प्रगति के अनुकूल होनी चाहिए अर्थात नियन्त्रण सरल एवं उपयुक्त होना चाहिए जिससे किसी भी कर्मचारी द्वारा कोई असावधानी द्वारा गलती हो गयी है तो उसे सही प्रकार समझना चाहिए तथा भविष्य में किसी भी प्रकार की असावधानी एवं गलती न करे इसके लिए उसे सही प्रकार से बताना चाहिए। उसी प्रबन्ध में नियन्त्रण की प्रणाली को अच्छा एवं ठीक कहा जा सकता है। जिसे व्यक्ति सरलता से समझ सकें।

प्रबन्धन में नियन्त्रण प्रत्यक्ष रूप से होना चाहिए →

किसी भी संगठन की प्रबन्धकीय प्रक्रिया में नियन्त्रक और नियन्त्रण प्रत्यक्ष सम्बद्ध होना चाहिए। किसी भी प्रकार की समस्या या कार्य में उनके मध्य आवश्यक मध्यजन नहीं होना चाहि

प्रबन्धन में नियन्त्रण लचीला होना चाहिए →

प्रबन्धन में नियन्त्रण न तो अधिक सरल हो न अधिक कठोर होना चाहिए प्रबन्धन में नियन्त्रण लचीलापन वाला होना चाहिए, समय और परिस्थिति के अनुकूल नियन्त्रण होना चाहिए।

प्रबन्धन में नियन्त्रण निष्पक्ष हो →

प्रबन्धन में नियन्त्रण ऐसा होना चाहिए कि वह सभी के लिए समान हो अर्थात् नियन्त्रण निष्पक्ष होना चाहिए जिससे किसी के साथ पक्षपात न हो।

प्रबन्धन में नियंत्रण मितव्ययी होना चाहिए →

प्रबन्धन में नियन्त्रण मितव्ययी होना चाहिए अर्थात् धन और समय का अपव्यय न हो इस प्रकार का नियन्त्रण होना चाहिए। वहीं नियन्त्रण पर जो धन और समय व्यय हो रहा है उसकी तुलना में उससे प्राप्त लाभ अधिक होना चाहिए।

Page No.
Date: / /

प्रबन्धन में नियन्त्रण की प्रक्रिया

प्रबन्धन में नियन्त्रण एक जटिल प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया को विभिन्न विद्वानों ने अपने-अपने मतानुसार स्पष्ट करने का प्रयास किया है, जिनमें से प्रमुख निम्नांकित हैं—

जेम्स एस० पीयर्स ने नियन्त्रण प्रक्रिया को मुख्य रूप से तीन स्तर बताये हैं जो कि इस प्रकार हैं—

1. नियोजन करना,
2. वास्तविक कार्यों की योजनाओं से तुलना करके रिपोर्ट देना।
3. निर्णयात्मक कार्य करना।

जुरन महोदय ने नियन्त्रण को निम्नांकित स्तरों में बाँटा है—

1. नियन्त्रण के बिन्दुओं का चयन करना।
2. माप की इकाइयों की परिभाषा।
3. वास्तविक कार्यों का मूल्यांकन
4. कार्यों के मानदण्डों का चुनाव।
5. निर्णयानुसार कार्य करना।

एडवर्ड एम० एन्थोनी महोदय ने तीन स्तर बताये हैं—

1. लक्ष्य, 2. पद्धति, 3. जाँच।

उपर्युक्त विवरण के आधार पर स्पष्ट होता है कि प्रबन्धन में नियन्त्रण की प्रक्रिया बहुत ही जटिल है, क्योंकि नियन्त्रण ऐसा होना चाहिए जिससे संस्था के लक्ष्यों की प्राप्ति हर सम्भव हो एवं किसी का भी अहित न हो। इस आधार पर नियन्त्रण की प्रक्रिया निम्नांकित रूप में होनी चाहिए—

प्रबन्धन में नियन्त्रण की प्रविधियाँ

शिक्षा प्रक्रिया को नियन्त्रित करने के लिए प्रबन्धन में प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है। एक शिक्षण संस्थान में नियन्त्रण की प्रक्रिया व प्रविधियाँ वह उपकरण होती है जिसके माध्यम से प्रबन्धन सभी व्यक्तियों या कर्मचारियों के कार्यों का मूल्यांकन करता है अतः प्रबन्धन में नियन्त्रण हेतु निम्नांकित प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है

(1) तुलनात्मक विधि - Comparative
(2) अवलोकन विधि - Observation
(3) विश्लेषण विधि - Analysis Technique
(4) नीति प्रविधि - Policy Technique
(5) प्रबन्ध सूचना विधि - Management Inform
(6) अभिप्रेरणा विधि
(7) समीक्षात्मक प्रविधि Critical
(8) इस विधि द्वारा मूल्यांकन किया जाता है।

1. तुलनात्मक विधि →

शिक्षण संस्थान में कार्यरत कर्मचारियों एवं शिक्षकों आदि के कार्यों की तुलना करके नियन्त्रण में सहायता मिलती है। नियम - पुस्तिका अधिकारियों को उनके अधिकार क्षेत्र एवं दायित्वों का ज्ञान कराकर परोक्ष रूप से नियन्त्रण में सहायता करती है।

2. अवलोकन प्रविधि →

शिक्षकों एवं अधिकारियों कर्मचारियों, कार्यों का समय - समय पर अवलोकन करने में समय लगता है और ऊपरी तौर से यह एक अकुशल पद्धति दिखलाई देती है, किंतु अधीनस्थों की क्रियाओं के नियन्त्रण की कोई अन्य विधि इसके स्थान पर प्रयुक्त नहीं की जा सकती है।"

3. विश्लेषण प्रविधि →

यह एक उपयुक्त प्रविधि है इसके द्वारा अधीनस्थों के कार्यों का अवलोकन कर उनका विश्लेषण करके कार्यों के लक्ष्यों एवं उद्देश्यों को स्पष्ट किया जाता है। तत्पश्चात उनके कार्यों को नियन्त्रित किया जा सकता है।

4. नीतिगत प्रविधि → यह एक प्रमुख प्रविधि है। नीतियाँ इस प्रकार की हो कि अधीनस्थों को मार्गदर्शन प्रदान करती हो जिससे वे नियंत्रित और सही ढंग से अपने - अपने कार्यों को कर सकें तथा कर्मचारी नीतियों का आदेश मानकर चलें।

5. प्रबन्ध सूचना प्रविधि → किसी भी संगठन या संस्थान में सूचना प्रणाली जितनी सुदृढ़ एवं व्यवस्थित होती है, प्रबन्धन में नियन्त्रण उतना ही सरल और अच्छा होता है। इसके विपरीत सूचना व्यवस्था में बाधा उत्पन्न होने पर कार्य अर्थ शिथिल हो जाता है।

6. अभिप्रेरणा प्रविधि → अभिप्रेरणा प्रविधि सबसे प्रभावशाली प्रविधि है। अभिप्रेरणा उत्तम नियन्त्रण और स्वतः नियन्त्रण की भी सर्वोत्तम विधि है, इसमें कर्मचारियों को अभिप्रेरित करके उनका ऐच्छिक सहयोग प्राप्त किया जा सकता है।

7. समीक्षात्मक प्रविधि →

यह एक प्रविधि उपयुक्त प्रविधि है। इसके अन्तर्गत महीने में एक या दो बार मीटिंग करके सभी कार्यों की समीक्षा हेतु कार्यों का मूल्यांकन हों, जिससे नियन्त्रण व्यवस्था सही एवं निरन्तर चलती रहे एवं सभी अपने - अपने कार्यों को पूरी ईमानदारी एवं सच्चाई से करें। किसी भी सफल प्रशासन के लिए यह अति आवश्यक है कि कुछ ऐसी समितियों एवं संस्थानों का गठन किया जाये, जो शिक्षा सभी विभागों (शिक्षा मन्त्रालय आदि) को समय समय पर अपनी सलाह देती रहें। जिससे शिक्षा प्रक्रिया एवं प्रणाली में सुधार और विकास किया जा सके। इस हेतु निम्नांकित बोर्ड एवं परिषदें निम्नवत हैं —

1. शिक्षा की केन्द्रीय सलाहकार बोर्ड
2. केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड
3. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
4. राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद्
5. भारतीय प्राथमिक शिक्षा परिषद्
6. भारतीय माध्यमिक शिक्षा परिषद्
7. भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद्
8. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग

उपर्युक्त सभी बोर्डों एवं परिषदों का शिक्षा के नियन्त्रण में पूर्ण योगदान है। ये सभी अलग-अलग रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं तथा प्रणाली को भी नियन्त्रित करते हैं।

प्रबन्धन नियन्त्रण हेतु राज्य स्तरीय संस्थाएँ

हमारे देश (भारत) में शिक्षा का विषय मानी जाती है। इसलिए राज्य स्तर पर शिक्षा के प्रबन्धन में नियन्त्रण राज्य का उत्तरदायित्व है। इसके लिए राज्य स्तर पर विभिन्न संस्थाओं की स्थापना की गयी जो कि शिक्षा के नियन्त्रण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिकाओं को निर्वाह करती हैं। जो कि निम्नांकित हैं—

1. राज्य शिक्षा तकनीकी संस्थान अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद
2. राज्य शिक्षा तकनीकी संस्थान
3. उच्च शिक्षा अध्ययन संस्थान
4. राज्य स्रोत केन्द्र
5. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान
6. जिला स्रोत इकाइयाँ
7. ब्लॉक स्रोत इकाइयाँ

उपर्युक्त राज्यस्तरीय संस्थाएँ प्रबन्धन

नियन्त्रण में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती है।

प्रबन्धन में नियन्त्रण के प्रकार

शिक्षा प्रक्रिया में नियन्त्रण प्रबन्धन का एक महत्वपूर्ण कार्य है। शिक्षा जीवन-पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। शिक्षा द्वारा किसी भी संगठन या शिक्षण संस्थान (विद्यालय) के पूर्व-निश्चित लक्ष्यों की प्राप्ति होती है। इन लक्ष्यों को सही एवं समयानुसार प्राप्त करने के लिए नियन्त्रण की आवश्यकता होती है शिक्षा पर नियन्त्रण की समस्या यह है कि किसका कितना नियन्त्रण हो? किसी भी शैक्षिक संगठन की आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाने पर वह विकसित होता है। वस्तुतः शैक्षिक प्रशासन शिक्षण संस्थानों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ही होता है जिसमें शिक्षकों एवं प्रशासकों के मध्य परस्पर सहयोग आवश्यक होता है साथ ही साथ शिक्षकों एवं प्रशासकों के मध्य अनुसंधान, प्रशासन की गुणवत्ता, प्रगति आदि